खुश रहने के लिए मन को स्वच्छ एवं पवित्र बनाने की ज़रूरत

ओ.आर.सी.-गुड़गांव। दीपावली विजय की खुशियां मनाने का त्योहार है। आज दीपावली सिर्फ एक यादगार बनकर रह गया है, किसी को भी इसके वास्तविक रहस्य का पता नहीं है। उक्त उद्गार ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर में दीपावली के पावन पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि बाहर के दीपक जलाना तो बहुत आसान है, लेकिन असली आवश्यकता तो हमें स्वयं के भीतर के दीपक को जगाने की है। दीपावली भी वास्तव में स्वयं के अंदर की बुराइयों को समाप्त कर आत्मा के दीपक को जगाने का प्रतीक है। उन्होंने बताया कि हम एक दिन दीप जगाकर एवं आतिशबाजी करके खुश हो जाते हैं, लेकिन सदा ही कैसे खुश रहें, उसके लिए तो स्वयं को जगाने की ज़रूरत है। सदा खुश रहने के लिए

कार्यक्रम में केक कटिंग करते हुए दादी हृदयमोहिनी। साथ हैं ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. मोहिनी , ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. शुक्ला तथा अन्य।

हमें अपने मन को स्वच्छ एवं पवित्र बनाने की ज़रूरत है, क्योंकि मन ही है जो सुख और दु:ख का अनुभव कराता है। उन्होंने आगे कहा कि वर्तमान समय स्वयं परमात्मा इस कलियुगी दुनिया का परिवर्तन कर अब पुन: सतयुग की स्थापना का कार्य कर रहे हैं, उसके लिए वो हमारी आत्मा को ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित कर रहे हैं। इसलिए आज इस दिवाली पर सभी ये संकल्प करें कि बाहर की सफाई के साथ-साथ हम अपने मन की सफाई पर भी ध्यान देंगे और सबके प्रति शुभ-कामनायें रखेंगे।

ब्रह्माकुमारी संस्था के मुख्य सचिव ब्र.कु. बृजमोहन ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि दिवाली को सभी नये कपड़े पहनते हैं, अपने घरों की साफ सफाई करते हैं और कोई न कोई चीज़ अवश्य खरीदते हैं। इसका यही अभिप्राय है कि हम स्वयं को इतना स्वच्छ एवं पवित्र बनायें, जिससे कि हमारा जीवन स्वत: ही खुशनुमा बन जाए।

दादी रुकमणि, दादी कमलमणि एवं अन्य वरिष्ठ बहनों ने भी सबको दिवाली की शुभकामनायें प्रदान कीं। कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रस्तुतियां जैसे नृत्य, गीत एवं कविताओं के द्वारा भी सबका मनोरंजन किया गया। ओ.आर.सी. में दीपावली का यह पर्व बहुत ही श्रद्धा-भाव एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम में दिल्ली एवं आस-पास के 1300 से भी अधिक लोगों ने शिरकत की।

वर्तमान परिवेश में गीता ज्ञान की ज़रूरत

कार्यक्रम के दौरान मंचासीन ब्र.कु. उषा, ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु. रानी, महंत,अरेराज तथा अन्य।

मुज़फ्फरपुर-विहार। वर्तमान समय शक्तिहीनता का है। गीता का मुख्य उद्देश्य आत्मा का सशक्तिकरण है। गीता ग्रन्थ में स्पष्ट लिखा है कि मेरी प्राप्ति वेद अध्ययन, जप, तप, दान, पुण्य से नहीं होगी, सिर्फ मुझे याद करने से प्राप्ति होगी। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'गीता ज्ञान द्वारा स्वर्णिम युग की स्थापना' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन,दिल्ली ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय परमात्मा की निशानी गीता है तथा यादगार है शिव प्रतिमा। गीता में भगवान ने कहा है कि मैं जन्म-मरण में नहीं आता, मेरा अवतरण होता है और मैं अपना परिचय खुद देता हूँ। गीता में भगवान का रथ भी वर्णित है। उन्होंने दीपावली के उपहार में मुज़फ्फरपुर हाजीपुर मार्ग में रिट्रीट सेंटर 'शांति शक्ति सरोवर' निर्माण की घोषणा की, जो सम्पूर्ण बिहार वासियों के जीवन को सुख शांति से भरपूर करने वाला होगा।

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा ने कहा कि महाभारत के पात्रों का चरित्र आज के समय स्पष्ट दिखाई दे रहा है, दुशाल, दुर्मुख, दुष्कर्ण आदि। वर्तमान समय का सम्बन्ध स्वार्थ पर आधारित है। उन्होंने कहा कि दुर्योधन ने धर्म और अधर्म मार्ग की जानकारी की बात कही थी, लेकिन उसने कहा कि धर्म-मार्ग पर मेरे लिए चलना असंभव है। उन्होंने आगे कहा कि महाभारत का युद्ध अहिंसक था ल-किन शास्त्रों में उसे उल्टा रूप दे दिया गया। आज पूरा वश्व विनाश के कगार पर है, आज की स्थिति कुरुक्षेत्र वाली है, ऐसे समय में मानव जाति को गीता ज्ञान की विशेष ज़रूरत है। वर्तमान समय दुर्गुणों का विनाश और सद्गुणों को धारण करने का है।

डॉ. पुष्पा पाण्डेय,जबलपुर ने धर्म ग्लानि के लक्षण और चित्रों को बड़े ही स्पष्ट तरीके से लोगों के सामने रखा, जिसमें गाय द्वारा बछड़ी का दूध पीना, कन्या का मुख से वर मांगना, काम आधारित लाइलाज बीमारी उत्पन्न होना, माँ-बाप की अवहेलना करना, अध्यात्म के नाम पर दंगा करना, बड़े-बड़े नेता व धर्मगुरुओं का जेल जाना आदि हैं।

मंच का कुशल संचालन ब्रह्माकुमारीज़ की टाटा ज़ोन प्रभारी ब्र.कु. अंजु ने किया। ब्रह्माकुमारीज़ की बिहार प्रभारी ब्र.कु. रानी ने आये हुए सभी अतिथियों का स्वागत शॉल ओढ़ाकर और गुलदस्ता देकर किया। इस अवसर पर अरेराज धाम के महंत का भी शॉल ओढ़ाकर अभिवादन किया गया। बहन बबिता रानी ने बड़े ही आकर्षक एवं ज्ञान रस में सराबोर कई गीत प्रस्तुत किये। हीरा लाल जी ने कविता सुनाई। ब्र.कु. मुकुट ने कॉमेन्ट्री द्वारा सहज राजयोग का अभ्यास कराया। ब्र.कु. राजनारायण ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम स्थल पर भव्य आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी एवं बुक स्टॉल का भी आयोजन किया गया।

सत्कर्म को निजी जीवन से जोड़ें

नवसारी-गुज.। हमारे द्वारा किये गए छोटे-छोटे सत्कर्म ही हमारे जीवन में खुशियों के स्रोत होते हैं। स्थूल धन, वस्त्र और वस्तुओं को ज़रूरतमंद लोगों को देना ही वास्तविक सत्कर्म नहीं है, अपितु स्वयं को इस शरीर द्वारा कर्म कराने वाली आत्मा समझकर कर्म करने से हमारे साधारण कर्म भी मानवता के लिए प्रेरक बन जाते हैं। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' कार्यक्रम में सत्कर्म महायोजना के प्रणेता ब्र.कु. रामप्रकाश ने व्यक्त किये।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. रामप्रकाश, एम.बी. त्रिवेदी, ब्र.कु. गीता व अन्य।

उन्होंने कहा कि किसी उदास व्यक्ति को खुशी प्रदान करने से खुशी बढ़ जाती है, जैसे एक छोटा सा बीज समय आने पर बहुत बड़ा वटवृक्ष का स्वरूप धारण कर लेता है। इसी प्रकार एक छोटा सा सत्कर्म, समय आने पर बहुत बड़े पुण्य में परिवर्तित होकर मीठा फल बन जाता है जिसे खाकर हम धन्य हो जाते हैं। हम सत्कर्म फल की आशा से न करें क्योंकि समय आने पर समस्या और लोग बदल जाते हैं, लेकिन सत्कर्म का शुभ परिणाम अवश्य ही फल देता है। उन्होंने आगे बताया कि देना ही लेना है। जो देंगे वो लौटकर आयेगा इसलिए दूसरों को सदा अच्छा ही दें, ताकि हमें भी जीवन में सदा अच्छा ही मिलता रहे। हम अपने मन की असीम शक्ति को दुआ देने, शुभकामना देने में लगा सकते हैं।

अतिथि विशेष के रूप में उपस्थित एम.बी. त्रिवेदी ने बताया कि ज़िन्दगी में आने वाली समस्या का सामना करके सत्कर्म की राह पर चलते रहने से हम सफल जीवन जी सकते हैं।

ब्र.कु. गीता,सेवाकेन्द्र संचालिका,नवसारी ने कहा कि कर्म में अपना अधिकार रखें, लेकिन फल की इच्छा नहीं रखें। वर्तमान में यदि हम दूसरों के सहयोगी बनकर श्रेष्ठ कर्म का खाता खोल देते हैं तो हम अपना भविष्य भी आनंददायी बना सकते हैं। हमारा दूसरों को दिया हुआ सहयोग हमें दुआ का पात्र बना देता है।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510
सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - **9414006096, 9414182088,** Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक **190** रुपये, तीन वर्ष **570** रुपये, आजीवन **4500** रुपये । **विदेश - 2500** रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/12-14, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2013-14, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 5th Nov 2014
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।